बिलौटी

(लघु-उपन्यास)

अनवर सुहैल

बिलौटी

अनवर सुहैल

लघु-उपन्यास

© अनवर सुहैल

प्रथम संस्करण : २०१४

संपर्क
अनवर सुहैल
टाइप ४/३ आफिसर कालोनी
पो. बिजुरी जिला अनुपपुर म. प्र.
४८४४४० मो. ९९०७९७८१०८
sanketpatrika@gmail.com

बिलौटी

बिलौटी ठेकेदारिन साइकिल से उतरी। साइकिल स्टैंड पर लगा, सीधे परसाद पान गुमटी पर आई। परसाद का गतिशील हाथ क्षण भर का ठिठका। गुमटी के सामने खड़े अन्य लोगों का ध्यान बंटा।

रामभरोसे हिंदू होटल, धरम ढाबा, ममदू नाई की गुमटी और बस-स्टैंड के आस-पास बिखरे लोग सजग हुए। परसाद ने पान का बीड़ा बिलौटी की तरफ बढ़ाया। बिलौटी पान लेकर बड़ी नफ़ासत से उसे एक गाल के सुपुर्द किया और खुली हथेली परसाद की तरफ बढ़ा दी। परसाद ने अख़बार के टुकड़े पर सादी पत्ती, तीन सौ चौंसठ, चमन बहार और सुपारी के चंद क़तरे रखकर बिलौटी की तरफ पेश किया। पान की एक टूटी डंडी में चूना चिपका कर आगे बढ़ाया। बिलौटी ने बड़े इत्मीनान से तंबाकू-ज़र्दा फांक कर चूना चाटते हुए एक रूपए का सिक्का गुमटी में बिछे लाल कपड़े पर उछाला। फिर सधे क़दमों से साइकिल की तरफ़ बढ़ गई।

बिलौटी के पैरों में जूता-मोजा था। सलीके से बंधी लाल-गुलाबी साड़ी में उसकी गेंहुआ रंगत खिल रही थी। साड़ी और ब्लाउज़

के बीच से झांकता उसका पेट और पीठ का हिस्से पर लोगों की आंखें चिपक गई थीं। साइकिल के कैरियर में एक रजिस्टर और एक डायरी फंसी थी। उसकी भूरी आंखों के जादू और मर्द-मार अदाओं से बस-स्टैंड का वातावरण प्रतिदिन इसी तरह मंत्र-बिद्ध होता है।

महाप्रबंधकर कार्यालय की तरफ जाने वाली मुख्य सड़क पर जब वह साइकिल का पैडल मारती सर्र से चली गई, तो तमाशबीन बिलौटी के सम्मोहनी प्रभाव से आज़ाद हुए। सहज हुए लोग, सहज हुए दुकानदार, सहज हुए खरीददार, सहज हुए यात्रीगण और सहज हुए बिलौटी के भूत, भविष्य और वर्तमान जानने का दावा ठोंकने वाले जानकार!

यहां तक कि उसके व्यक्तित्व से अंजान लोगों के दिलो-दिमाग में काफी देर तक सनसनाती रही बिलौटी...

कितना भी बखान किया जाए, बिलौटी के विलक्षण व्यक्तित्व का समग्र वर्णन किसी एक की ज़ुबान से होना असम्भव है। हर बार कुछ नया जुड़ जाता, कुछ पुराना छूट जाता। नए लोग, पुरानों से खोदा-खादी करते-''कौन है रे बप्पा, कौन है ई आफ़त!''

पुराने टुकड़ों में बताते बिलौटी-पुराण....

कई टुकड़ों-चीथड़ों को इकट्ठा कर गुदड़ी बनाने का सब्र इस दौर के श्रोताओं में अब कहां दिखता है? वह भी ऐसे समय में, जब टीवी, सिनेमा वाले किस्सा-कहानियों को नज़रअंदाज़ कर मनोरंजन परोस रहे हैं। नतीजतन बिलौटी एक अबूझ पहेली

बनी रहती। जब भी वह मर्दों के संसार में प्रवेश करती, अनगिनत प्रश्नों, जिज्ञासाओं, दंतकथाओं के बीज छींट कर फुर्र हो जाती।

कौन जानता था कि पगलिया ससुरी की बउड़ही बिटिया बिलौटी बड़ी होकर इतनी तेज-तर्रार निकल जाएगी। कोयले की झौड़ी (टोकरी) सिर पर ढोते-ढोते इतनी तरक्की कर जाएगी कि एक दिन 'लेबर-सप्लायर' बन जाएगी।

'ठीकेदारिन कहते हैं उसे मज़दूर-रेज़ा, नेता-परेता।

ठाठ तो देखिए....ठाड़े-ठाड़े गरियाती है लेबरों, अफसरों और मउगे नेताओं को।

नेता, अफसर, ठेकेदारों के बीच उठती-बैठती और क्या जाने दारू-मुर्गा भी खींचती है।

ओंठकटवा तिवारी राज़दाराना अंदाज़ में बताता-''रे बप्पा, खटिया में खुद 'मरद' बन जावै है छिनाल! अच्छे-अच्छे पहलवानों की हवा निकाल देवे है। एही कारन तुलसी बाबा आगाह कर दिए हैं कि ढोर, गंवार, सूद्र, पसु-नारी, ई सब ताड़न के अधिकारी। इन सबसे बच सकौ तो बच के रहौ। लेकिन ओही मूड़ै मां चढ़ाए हैं ससुरे ठीकेदार, मुंशी और कोलियरी के अधिकारी। तब काहे न छानी पे चढ़के मूते ई बिलौटिया....जानत हौ भइया, एक गो बिटिया है ओखर, का जाने 'सुरसत्ती' कि का नाम रखिस है। 'सुरसत्ती' ससुरी अंगरेजी स्कूल में पढ़े जावै है।''

•

लोग तो बस याद करते हैं पगलिया को। बिलौटी की मां पगलिया।

पगलिया की बेशुमार गालियां बस-स्टेंड पर अनवर गूंजा करतीं। वह हवा में गालियां बका करती। स्टैंड के पास बने पोस्ट-आफिस के लाल-डब्बे में लोग चिट्ठियां डालने आते तो उसकी गालियों का शिकार बन जाते। पगलिया को भरम रहता कि चिट््ठी डालने के बहाने लोग उसको और उसकी बिटिया बिलौटी को ताकते हैं। इसीलिए वह अंधा-धुंध गालिया बकती। लोग हंसते। बिलौटी ठीकेदारिन, शक्तिनगर-वाराणसी हाईवे के किनारे बस-स्टेंड के 'टिन-शेड' पर साधिकार कब्ज़ा जमाकर गुजर-बसर करने वाली पगलिया की कोख-जाई थी। गरीबी, अभाव, बदकिस्मती और ज़माने की बेरहम ठोकरें खा-खाकर पगलिया का जिस्म जर्जर हो गया था। उसकी रंगत झुलस चुकी थी। कहते हैं कि पगलिया जब आई थी ठीक-ठाक दिखाई देती थी। ओंठकटवा तिवारी ठीकै कहता-''अरे भइया, जवानी में तो गदहिया भी सुंदर दिखाई देवै है।''

यह तो अच्छा ही हुआ कि पगलिया को बिलौटी के बाद और बच्चे न हुए। बिलौटी का जन्म भी साधारण परिस्थितियों में नहीं हुआ था। तब पगलिया का डेरा बस-स्टेंड का टिन-शेड नहीं हुआ करता था।

चौदह-पंद्रह बरस पहले यहां पर कहां कुछ था।

उत्तर-प्रदेश के मिजर्ापुर ज़िले का आखिरी कोना। जहां कोयले की खदान खुलने वाली थी। वाराण्सी से रेनूसागर बिजली कारखाने तक काम-चलाऊ सड़क बन रही थी। तब शक्तिनगर आने के लिए सिंगरौली से रास्ता था या फिर औडी मोड़ से पहाड़ी की की जड़ पकड़ कर पैदल चलने से परासी, बीना, खड़िया, कोटा पहुंचा जाता था।

कहते हैं वाराणसी से रेनूसागर तक पगलिया बस से आई थी।

बस-स्टैंड पर बस खाली हो जाती।

उस दिन सब सवारियां उतर गईं और पगलिया न उतरी तो कंडक्टर उसके पास गया।

कंडक्टर को उस पर पहले से ही शक था। किराया न अदा की होती तो वह उसे लाता भी नहीं। पगलिया पिछली सीट पर सिकुड़ी-सिमटी बैठी हुई थी। गठरी थी एक उसके पास, जिसे बड़े जतन से गोद में रखे हुए थी। कंडक्टर कई तरह की नैतिक-अनैतिक सम्भावनाओं की कल्पना करता उसकी बगल में जा बैठा। बस में और कोई न था। चालक अपना झोला-सामान लेकर जा चुका था। रात के ग्यारह बज रहे थे। सवारियां अपने गंतव्य तक पहुंचने की हड़बड़ी में थीं। बस-स्टैंड के पश्चिम में एक ढाबा था। ढाबे का मालिक जीवन इस बस का इंतज़ार करके दुकान बढ़ाता था। ठंड अपना असर जमा चुकी थी। जीवन भट्टी की आग ताप रहा था। कंडक्टर और जीवन का पुराना याराना था। कंडक्टर अक्सर बनारस से अद्धा-पउवा ले आया करता और गर्मागर्म पराठे, आमलेट और बैगन-

आलू के भरते के साथ दोनों साथ-साथ खाना खाते। जीवन सोच रहा था कि कंडक्टर शायद दिसा-मैदान गया होगा। लेकिन कंडक्टर के सामने तो एक दूसरी थाली परोसी हुई थी। माले-मुफ्त, दिले-बेरहम... वह अकेले ही उस भोजन का स्वाद चखना चाहता था।

पगलिया की देह से अजीब दुर्गंध फूट रही थी।

बस की नौकरी, अधजले ईंधन की गंध, सिगरेट-बीड़ी-अगरबत्ती की मिली-जुली गंध और दिन भर की थकान से वह परेशान था किन्तु पगलिया की बीस-बाईस साल की युवा देह की दुर्गंध में एक और आदिम गंध शामिल थी।

कंडक्टर तड़प उठा। पूछा तो पगली मुस्कुराई। कुछ न बोली। नाम-गांव, रेनूसागर में किसी सगे-सम्बंधी या अन्य कोई भी जानकारी न देकर वह बस इत्ती सी मुस्कुरा देती। कंडक्टर उसका हाथ पकड़कर उतारने का उपक्रम करने लगा। दुर्गंधयुक्त देह की मादक गर्माहट से वह बौखला सा गया। उसकी बगल में बैठ चुपचाप उसे बांहों में घेर लेना चाहा। पगलिया आंखें झपका कर कुनमुनाई। उसमें इंकार की आहट थी न इकरार की।

बस के अंदर चांदनी रात के चांदीनुमा टुकड़े, खिड़की के रास्ते बिखरे पड़े थे। ऐसा ही एक मद्धम-दमकता सा टुकड़ा पगली के चेहरे पर कुदरती गहने के रूप में आ सजा था। पगली की देह-गंध या तो गायब हो गई थी, या फिर कंडक्टर के कोशिशों को वह सहजता स्वीकार कर रही थी। कंडक्टर इस अद्भुत यथार्थ को ईश्वर का दिया वरदान समझकर प्रसाद स्वरूप ग्रहण करना

चाह रहा था। कंडक्टर अधीर होकर उसकी देह का रसपान करने लगा। अचानक उसे लगा कि पगलिया कुछ बोली है। कंडक्टर चैतन्य हुआ। वह भूखी थी। कंडक्टर ने सोचा भगवान का प्रसाद है, बांट कर खाया जाए तो और अच्छा।
कंडक्टर अलग हटा तो पगली खुश दिखाई दी। कंडक्टर की जांघ में चिकोटी काट कर हंसी। कंडक्टर पगली के इस खुशी ज़ाहिर करने के तरीके पर सौ जान कुरबान हुआ। उसकी छातियां नापता वह नीचे उतर गया।
जीवन, ढाबे का मालिक, बिहार के सिवान जिले का निवासी था और इस बियाबान में बिना परिवार के रहता था। उसने जब कंडक्टर की बात सुनी तो वह काफी खुश हुआ। तय हुआ कि पगलिया के संग बस के अंदर ही 'जुगाड-फिट' किया जाए।
उधर पता नहीं पगली को क्या सूझी कि दबे पांव, पोटली कांख में दबाए बस से उतरी और बस के पीछे अंधियारे का लाभ उठाकर उस सड़क पर चल दी, जिसके बारे में वह नितांत अनभिज्ञ थी। उसे नहीं मालूम था कि सड़क कहां जाती है? सड़क वैसे भी कहीं आती-जाती नहीं, जाते तो मुसाफिर ही हैं, किन्तु उसे यह भी तो मालूम न था कि स्वयं उसे कहां जाना है।
आधी रात!
वह भी जाड़े के शुरूआती दौर की रात!
औड़ी मोड़ का यह इलाका अन्य जगहों से कुछ ज्यादा ही ठंडाता है।

पगली अकबकाई सी रेनूसागर की रोशनियों के विपरीत दिशा में चल दी। सामने भी रोशनियों के टुकड़े छितराए थे। महुआ, पलाश और आम के वृक्षों के बीच से छन कर आने वाली चांदनी की फुहारें रास्ता दिखातीं। पगली के लिए उजाला भी तो उतना ही निरर्थक था जितना कि अंधेरा।

चांद अपना सफर तय करता रहा और रेनूसागर से दक्षिण दिखा की तरफ पगलिया का सफ़र भी ज़ारी रहा। कोयला खदानें अभी नई-नई खुली थीं उनके कामगारों के लिए स्थाई-अस्थाई निवास बने हुए थे। वह एक ऐसी बस्ती में जा पहुंची जिसे खदानी लोग ‘कालोनी’ कहते थे। महुआ का एक बड़ा सा पेड़ देख वह उसके तने से टिक कर बैठ गई।

महुआ के पेड़ के ठीक सामने सिन्हा बाबू का क्वाटर हुआ करता था। नई कालोनी अभी व्यस्थित नहीं हुई थी। ‘ले-आउट’ के अनुसार ठेकेदार धड़ाधड़ ‘फिनिशिंग-टच’ देने का प्रयास कर रहे थे। माचिस की डिबियानुमा क्वाटरों में कर्मचारी अपना संसार गढ़ने में व्यस्त थे। पगली महुआ के पेड़ की पुश्त पर टिकी थी। वह भूख के एहसास को थकावट से पराजित करने का प्रयत्न करती सोने का उपक्रम करने लगी। ठंड अब बढ़ गई थी।

●

रात-बिरात बेचैन आत्माओं की तरह मंडराने वाला जीव रमाकांत, नशे में धुत उधर से गुज़रा। चांदनी के धुंधलके-

उजियारे में महुआ के तले, एक गठरीनुमा आकृति देख कर वह ठिठका। दबे पांव पगली तक पहुंचा।

पगली शराब की भभक और रमाकांत के पैरों की आहट सुन सचेत हुई। रमाकांत पैर से गठरीनुमा चीज़ को टोहने लगा। पगलिया हड़बड़ा कर उठ बैठी। रमाकांत का नशा भाग गया। उसने अपने होंठ पर ऊंगली रख उसे चुप रहने का इशारा किया और जेब टटोलने लगा। जेब से तुड़ा-मुड़ा दो रूपए का नोट निकला। रूपया पगलिया की तरफ बढ़ाया उसने। पगलिया हंस दी। रूपया लेकर चांदनी में उसे देखने लगी। रमाकांत ने उसका चेहरा गौर से देखा। वैसे भी वह औरतों का नाम और चेहरा जानने वाला जीव न था। जिस तरह शराब की ब्राण्ड पर बहस किए बगैर उसे पूरी श्रद्धा से वह ग्रहण किया करता था, उसी तरह स्त्री-देह की उपलब्धता ही उसके लिए प्रमुख हुआ करती। नाम, काम-धाम, जात-पात के झमेले सब बेमानी थे।

पगलिया जाड़े से ठिठुर रही थी। रमाकांत कुछ सोचकर पगलिया को सिन्हा बाबू के क्वाटर में दुतल्ला में चढ़ने के लिए बनी सीढ़ी के नीचे की खाली जगह पर ले गया। यहां पगलिया को कुछ राहत मिली। ठंड से बची तो भूख के एहसास ने हमला कर दिया। उसने रमाकांत से कुछ खाने को मांगा। रमाकांत उसे गरियाने लगा। जब इस समय कहां कुछ मिलता। गरियाने के बाद शांत हुआ तो पगलिया के संग मौज करने का इरादा छोड़ना पड़ गया। वह भूखी-प्यासी है। कैसे हो उसकी भूख बुझाने का इंतज़ाम?

रमाकांत को अपने क्वाटर में रखी दाल-भात की पतीली याद हो आई, जिसे रात में खाकर वह सोता। कुछ सोचकर उसने पगलिया के कंधे थपथपाए और पीछे लाईन के क्वाटरों में गुम हो गया।
पगलिया भूख-प्यास से बेहाल थी। गठरी में दो-तीन डबलरोटी थी। याद आया तो गठरी खोल कर बैठ गई। डबलरोटी में इतनी गंध थी कि उसके देह से उठती दुर्गंध फीकी पड़ गई। डबलरोटी भुसभुसा भी गई थी। एक-दो टुकड़ा मुंह में डालकर चुभला रही थी कि रमाकांत एक पोलीथीन में दाल-भात लिए आ गया। एक दारू की बोतल में पानी का जुगाड़ भी साथ था। पगलिया दाल-भात पर टूट पड़ी। दारू की बोतल का पानी एक सांस में गटक गईं। रमाकांत उस दृश्य को देख कर स्तब्ध रह गया। पगलिया के सर्वांग दर्शन का अवसर मिला। सफर की गर्द और थकान के बावजूद उसके जवान चेहरे पर चमक बरकरार थी।
लेकिन ये क्या...जैसे ही पगलिया के पेट में भोजन गया, वह रमाकांत को धन्यवाद देने के स्थान पर उसे आन-तान गालियां बकने लगी। रमाकांत का नशा हिरन हो गया। नेकी का उसे ये क्या बदला मिला। वह गालियों की परवाह किए बगैर उस पर चढ़ाई कर बैठा। उसके गाली उच्चारते मुंह को अपने मुंह से बंद कर दिया। उसके हाथों को अपने दोनों पंजों से सख्ती से दबोचे रखा। उसकी टांगों को अपने भारी पैरों तले दबा लिया।

आ...ऊं....ई... करती पगलिया जल्द ही शिथिल पड़ गई। रमाकांत को इस नए चैलेंज में अनोखा रस मिला।

•

सिन्हा बाबू की धर्मपरायण पत्नी आदतन प्रात:-भ्रमण के लिए निकलीं। सीढ़ियों के पास से आती खर्राटे की आवाज़ सुनकर चौंकी। निगाह गई तो अवाक् रह गईं। अस्त-व्यस्त कपड़े में अपनी देह खोले-छितराए पड़ी युवती इधर कहां से आ गई? उन्हें उस युवती पर दया आ गई। उन्हें उसकी दशा पर दया हो आई। पास पहुंची तो दुर्गंध से उनका माथा फटने लगा। नाक बंद कर उस युवती तक पहुंचीं। ठंड से ठिठुरी काया, आहट पाकर भी न जागी। उसकी गहरी नींद भंग न हुई तो वे अपने क्वाटर चली गईं। लौटी तो उनके हाथों में एक पुरानी दरी थी। दरी से पगलिया की देह ढांक कर वह पैदजल घूमने-टहलने चली गईं। रास्ते भर उस युवती की स्थिति पर वह विचार करती रहीं। बेशक, युवती के जिस्म से रात में ज़रूर खिलवाड़ किया गया था। उन्होंने ठीक ही किया कि उसके बेपर्दा जिस्म को ढांक दिया।

टहलने के बाद जब वह लौटीं तो रिहन्द जल-सागर पर छाए पूरबी आसमान के प्रभाती सूरज का लाल-मोहक बिम्ब आंखों में बसा हुआ था। वे बेहद उदार हो गई थीं। रिहन्द के अंतहीन

जल-विस्तार की तरह उदार या कि प्रभाती सूर्य की सिंदूरी आभा को धरती पर परावर्तित करने वाले आकाश सी उदार...
कोहरोल की पहाड़ी से रिहन्द बांध का पानी समंदर का भ्रम पैदा करता। एक समंदर सोती हुई लहरों वाला। ज्वार-भाटा की अनिवार्यताओं से मुक्त, जिसका एक सिरा पूरबी आसमान की ढलान से सट सा जाता। जहां से दो सूरज एक साथ उगते। एक आसमान की गोद पर और दूजा रिहन्द के कटोरे पर...
इस दृश्य को देख एक नई स्फूर्ति सी वह महसूस किया करतीं।
घर के सामने कुत्तों के लड़ने की आवाज़ से उनकी तंद्रा भंग हुई। उन्हें युवती याद हो आई। सीढ़ी की तरफ निगाह गई तो देखा कि युवती को स्कूली बच्चे घेर कर खड़े हैं और दो कुत्ते डबलरोटी के टुकड़े के लिए लड़ रहे हैं। पगलिया किचड़ियाई निंदासी आंखों से कुतूहलवश ये नया दृश्य आत्मसात कर रही थी। उसे अपनी यात्रा का ये नया पड़ाव सुखद लगा रहा था। वह अपने में मगन थी। उसने गठरी खोल कर एक टूटा आईना निकाला और अपना चेहरा देखने लगी।
सिन्हा बाबू की पत्नी ने पहले बच्चों को डांट कर भगाया, फिर कुत्तों को और उसके बाद पगलिया से पूछना चाहा कि वह कौन है? कहां से आई है? कहां जाना है? क्या यहां उसका कोई परिचित है? तमाम प्रश्न, तरह-तरह के प्रश्न, हर प्रश्न उस पगलिया की बौराई-निंदासी आंखों में गुम जाता। तब भन्नाकर उन्होंने कहा--''चल भाग यहां से!''
पगलिया को बुरा लगा।

वह अचानक गालियां बकने लगी।

फिर उसने अपनी गठरी में बिखरी चीज़ों को समेटा। दरी को छोड़ वह उठी।

चलने लगी तो सिन्हा बाबू की पत्नी ने उससे दरी साथ ले जाने को भी कहा। पगली पहले तो दरी को भावहीन निगाहों से ताका और फिर दरी को कंधे पर डाल कर चल दी।

सीढ़ियों के बाहर आकर उसने दाएं-बाएं देखा। ऊपर-नीचे ताका। कुछ समझ न आया। हो सकता है वह कालोनी की एक ही डिज़ाइन और एक ही रंग से रंगी इमारतों को देख विस्मित हुई हो। हो सकता है निर्माणाधीन सड़क के ऊबड़-खाबड़ स्वरूप, यत्र-तत्र बिखरी हुई भवन-निर्माण सामग्री आदि देख कर उसे असुविधा महसूस हुई हो। बहरहाल, उसने जो भी सोचा-समझा हो, उसके क़दम उठे। महुआ के पेड़ की छाया तले वह रूकी। कंधे की डाली दरी को ज़मीन पर पटका और वहीं ज़मीन पर पसर गई। पल भर बाद उसके खर्राटे गूंज उठे। सिन्हा बाबू की पत्नी ने माथा पीट लिया। जाने कौन बला उनके क्वाटर के आगे आ पड़ी थी।

तब तक शेख़ बाबू की पत्नी आ निकलीं। सिन्हा बाबू की पत्नी ने सुबह की घटना बताई, शेखाईन द्रवित हुईं।

पगलिया सोई तो उठी दिन के बारह बजे। जागती नहीं, लेकिन कुत्तों की लड़ाई से उसकी नींद टूटी। पोटली उधेड़कर कुत्ते डबलरोटी के टुकड़े हज़म कर चुके थे। दूसरे टुकड़े के लिए कुत्तों ने जब पोटली पर धावा बोला तो पगलिया जाग गई। लेटे-लेटे

ही चुनिंदा मर्दाना गालियां वह बकने लगी। उसके लिए आसान था कि पत्थर से या हाथ-पैर से कुत्तों को दुत्कारती-भगाती, लेकिन इतना विवेक होता तो भला वह पागल कहां से कहलाती।

कहा जाता है कि इस क्षेत्र में उसके होठों से पहले-पहल उच्चारित यही गालियां थीं। ये उसकी गालियों का पहला सार्वजनिक प्रदर्शन था। गालियों के अलावा उसे और किसी तरह के वाक्य बनाना नहीं आता था।

शेखाईन ने पगलिया के लिए अपनी उतारन साड़ी, ब्लाउज़ और पेटीकोट ला दिया। आस-पास के अन्य लोगों ने उसे घर का बचा-खुचा खाना दिया। पगली के चेहरे पर निश्चिंतता के भाव दिखने लगे। वह इत्मीनान से खाना खाने लगी।

कहते हैं कि यदि सिन्हा बाबू की पत्नी और शेखाईन ने उसे आश्रय न दिया होता तो उन ठंड के दिनों में, एक अपरिचित-अन्जान जगह में उसका क्या हश्र होता। उसकी स्त्री-देह को भेड़िए झटक लेते या बाघ खा जाता। वह बचती भी या नहीं।

किन्तु क्या वह वाकई बच पाई? यह तो कई महीने बाद पता चला कि पगलिया गर्भवती है। सिन्हा बाबू की पत्नी को शक तो पहले से हो गया था, जब उसकी उबकाई और उल्टियों ने रात का सन्नाटा तोड़ा था।

पगलिया गर्भवती क्यों न होती?

पगलिया कोई ‘पवित्र कुंआरी मरियम’ तो थी नहीं, न ही वह कोई राजकन्या कुन्ती ही थी। न दुनिया के ज्योतिषियों,

खगोल-शास्त्रियों ने इधर किसी नए नक्षत्र के उदय होने का संकेत ही दिया था। यह तो एक सामान्य सी घटना थी। जिस तरह धरती की कोख फाड़कर, चुपचाप पौधा आ निकलता है, जिस तरह आसमान को चीरकर अलस्सुबह सूरज की किरणें फूटती हैं...

पगलिया पेट से थी। यह एक ध्रुव सत्य था। वह कौन था जिसका बीज उसकी कोख की धरती पर रोपित था, हर कोई जानता था, किन्तु सभी खामोश थे। रमाकात भी चुप मारे रहता। वही रमाकांत, पियक्कड़, दरूआ रमाकांत, जो एक बार सरेआम महुआ तले, पगलिया की झोंपड़ी से बरामद हुआ था। रमाकां पकड़ा नहीं जाता, किन्तु उसकी घरवाली को उस पर संदेह था। पीता था तो ठीक था। दारू पीना कोई ऐसी बुरी बात नहीं। कोलियरी-खदान वाले इलाके में वैसे भी दारू की खपत ज्यादा रहती है।

''गौरमिंट खुदै बेचती है तो फिर जनता काहे नहीं पिए!''

इसी तर्क को वह मानती थी। रमाकांत का पीकर इधर-उधर मुंह मारना उसे बर्दाश्त न हुआ।

पूरी कालोनी जानती थी कि रमाकांत और पगलिया के बीच रागात्मक सम्बंध है। उसके मित्र 'आंख मारकर' रमाकांत से उसकी 'फेमिलि' का समाचार लिया करते थे। रमाकांत भी ढीठ किस्म और मज़बूत चेसिस का खचड़ा था, ठीक अपनी सन् पचहत्तर मॉडल गोल टंकी वाली काली राजदूत मोटरसाइकिल की तरह। अपनी आवाज़ के कारण सही मायनों में 'फटफटी'

थी वह! राजदूत फटफटिया की कान फाड़ू आवाज़ से पगलिया जान जाती और रमाकांत की घरवाली भी कि 'भयल चुड़ियन के भाग, बलम सिंगलौली से लउटे!''

एक रात की बात है, तबरीबन ग्यारह बजे, अंधियारी पाख में, रमाकांत की घरवाली ने कालोनी के कुछ लोगों को इकट्ठा किया। फिर पगलिया के महुआ तले बनी झोंपड़ी के बाहर सब को ले आई। झोंपड़ी के पीछे तरफ राजदूत मोटर-साइकिल की झलक मिल रही थी। हो-हल्ला सुनकर झोंपड़ी के अंदर जल रही ढिबरी बुझा दी गई। पगलिया टाट का परदा हटा कर, मां-बहिन की गाली बकती बाहर निकल आई। बड़बड़ाती तो वह हमेंशा थी, लेकिन इतना ग़लाज़त भरा होगा उसमें, कोई न जानता था।

वह कालोनी की तमाम स्त्रियों को कुल्टा और चरित्रहीन साबित कर रही थी और उस परिमाण में अपने कृत्य को क्षम्य बता रही थी।

उसकी गालियों की परवाह किए बग़ैर दो-तीन लोग आगे बढ़े। पुलिस बुलाने की धमकी असरदायक साबित हुई। एक गोल-मटोल मर्दाना साया झोंपड़ी से निकला और बड़ी रफ़्तार से पीछे नाले की तरफ भाग गया। अंधेरा काफ़ी था, फिर भी टार्च की रोशनी में देखा सभी ने, वह रमाकांत ही था....

•

बिलौटी ये किस्सा जान न पाती, लेकिन इधर-उधर से जन्म पूर्व का किस्सा भी उसे पता चल ही गया। बिलौटी के जन्म के बाद पगलिया ने ने बस-स्टैंड के ‘टिन-शेड’ पर क़ब्ज़ा जमा लिया। इधर कालोनी वालों ने विरोध किया। पगलिया की उपस्थिति को भला सभ्य समाज कैसे बर्दाश्त कर पाता। बात कॉलरी-प्रशासन तक गई। सिक्यूरिटी वाले उसे भगाने आए। देखा, कोयले की आंच में पगलिया अपनी दोनों टांगे फैलाकर उसमें नवजात बच्चे को लिटाए उसकी सिंकाई कर रही है। बेखयाली में उसका आंचल ढलका हुआ है। उसकी दूध भरी छातियां कोयले की लाल-लाल आंच में दमक रही हैं। किसी चर्च के बाहर लगी ‘पवित्र मां मरियम’ की निर्दोष छातियों की तरह ममता से भरपूर! सिक्यूरिटी वालों ने उस समय उसे छेड़ना उचित नहीं समझा। पगलिया, इन सबसे अनभिज्ञ, अपनी बोली-भाषा में कोई लोरी गुनगुना रही थी।

तब से, एक तरह से बस-स्टेंड का वह टिन-शेड पगलिया का स्थाई निवास बन गया। टिन-शेड के बगल में पोस्ट-ऑफिस है। पोस्ट-ऑफिस और पुलिस-चौकी के बीच एक सड़क है, जो अंदर कालोनी की तरफ जाती है।

इस नवनिर्मित कालोनी में मानव-समुदाय की सभ्यता, संस्कृति और जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली व्यवस्थाएं स्वत: बन गई हैं। जैसे बीस बिस्तरों वाला अस्पताल, हिन्दी-अंग्रेजी माध्यम के कई स्कूल, बैंक, थाना, रेल्व-स्टेशन, शापिंग-सेंटर, कैंटीन, मनोरंजनालय, खेल

का मैदान, दमकल विभाग के अलावा छोटी-छोटी गुमटियों में बसे दर्जी, नाई, पनवाड़ी, धुनिया, भड़भूंजे, झटका और हलाल दोनों तरह के कसाई, फोटो-स्टूडियो, सुनार, मोची, धोबी, झोला छाप डॉक्टर, मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, श्मशान-घाट, कब्रिस्तान आदि तमाम सुविघाओं से लैस नगर-व्यस्ािा। कहते हैं पुलिस-चौकी के पास आ बसने से पगलिया और ज्यादा बर्बाद होने से बच गई। पहले तो जिसका सुर समाता, दो-चार रूपए दिखाकर पगलिया से सट जाता था। अब तो रमाकांत भी इधर का रूख न करता। हां, पगलिया स्वयं दिलजले पुलिसवालों के लिए ज़रूर 'माले-मुफ्त' थी। बिलौटी के आ जाने से पगलिया अब उतना भटकती-घूमती न थी। कालोनी के लोग यथासम्भव उसकी मदद करते। बिल्ली जैसी भूरी आंखों वाली बिलौटी हर दिन एक बरस की गति से बढ़ने लगी।

टिन-शेड के पीछे बड़ी नाली थी, जिस पर टाट-बोरा, पोलीथीन और गत्ता-कागज आदि से चौतरफा आड़ बनाकर निस्तारनुमा जगह बना ली गई थी। पगली इसी घेरी गई जगह में नहाती धोती और संडास का काम भी लेती। दिन की रोशनी में पर्दे वाले काम करने में झिझक होती थी, इस लिए जब बिलौटी कुछ समझदार हुई तो बड़ी नाली पर आकर गिरती छोटी नाली पर, जिसके दोनों तरफ क्वाटर के पिछले दरवाजे और चारदीवारी से सटाकर बनाई गई कचरा-पेटी बनाई गई थी।

उसी कचरा पेटी की आड़ में बिलौटी अपनी हाजत से फारिग हुआ करती।

छह-सात साल की उम्र में ही उसे काफी अक्ल आ गई थी। पगलिया मां को वह उल्टा-सीधा पढ़ाने लगी थी। सामने चौराहे पर अंडा बेचने वाली बुढ़िया की पोती सनीचरी से उसकी अच्छी दोस्ती हो गई थी।

ऐसे ही एक दिन, कचरा पेटी के पीछे फ्राक उठाए मगन वह बैठी निपट रही थी कि खटका हुआ। उसकी निगाह आवाज़ की तरफ गई। उसने देखा कि एक आदमी जिसके खुले बदन पर सिर्फ एक तौलिया लिपटा था, उसकी तरफ देख रहा है। बिलौटी लजा कर उठ खड़ी हुई। फ्राक का घेरा घुटनों तक ढांक लिया। उसने सोचा कि आदमी जल्द ही हट जाएगा किन्तु वह आदमी बड़ा बेशर्म निकला। उसने खड़े-खड़े तौलिया सामने की तरफ से पूरा खोल दिया। अंदर वह कुछ भी पहने न था। बिलौटी घबरा गई। उसने भागना चाहा। उसके कदम थरथराने लगे। तालू सूखने लगा। आदमी वहीं खड़ा, इत्मीनान से मूतने लगा। बिलौटी आधा मल-त्याग कर पाई थी कि सरपट भाग गई और अपनी अनियंत्रित सांसों पर काबू पाया।

कुछ देर बाद जब वह स्थिर हुई तो सोचा कि सनीचरी को बता आए। उसके बाल-मस्तिष्क में उस घटना ने अजीबो-गरीब परिवर्तन कर दिए थे। सनीचरी ने जब वह घटना सुनी तो बेतहाशा हंसने लगी।

बिलौटी के लिए आदमी की नग्न देह कोई नई चीज़ न थी। पगली मां के पास रात-बिरात आने वाले मर्दों को वह जानवर बनते देख चुकी थी। इस तरह दिन के उजाले में, किसी समझदार आदमी की हरकत उसमें कुतूहल जगा गई। बिलौटी ने उस घटना पर कई कोण से विचार किया। ये तो तय था कि वह आदमी अपने कार्य से अनजान न था। वह भली-भांति जानता था कि बिलौटी उसे देख रही है। उसने भी बिलौटी को अच्छी तरह देखकर वह हरकत की थी। फिर उसने ऐसा क्यों किया?

अगली सुबह बिलौटी कुछ देर से उठी। पगली मां ने उसका झोंटा पकड़कर खींचा। दिन काफी निकल आया था। पगली मां बासी डबलरोटी को पानी के साथ अपने मुंह में ठूंस रही थी। बिलौटी को भी भूख लग आई। पहले दिशा-मैदान से फारिग होना आवश्यक था। इसलिए वह रद-बद कचरा पेटी के पीछे भागी। अभी वह फ्राक उठाकर बैठी ही थी कि तौलिया कमर पर बांधने का प्रयास करता वह आदमी पुन: प्रकट हो गया। आज भी वह बिलौटी को देख रहा था। बिलौटी उसी तरह बैठी रही। फ्राक का घेरा खींच कर उसने सामना ढंक लिया। सामने खड़ा आदमी बीस-पच्चीस हाथ की दूरी पर खड़े बाएं-दांए देख रहा था। सुनसान पाकर उसने तौलिया सामने की तरफ से उठा लिया और पेशाब करने की मुद्रा में उसके सामने खड़ा हो गया। वह पेशाब नहीं कर रहा था। उसका चेहरा, जिसमें घनी मूंछें और घुंघराले बाल थे, बेहद उत्तेजित और घृणास्पद दिख रहा

था। उसकी रोमहीन छाती खुली थी। बिलौटी जाने क्या सोच कर उठी नहीं, बैठी-बैठी उस व्यक्ति की विवेकहीन दशा का अवलोकन करने लगी। उसका दिमाग सांय-सांय कर रहा था। तभी एक दूसरे क्वाटर का पिछला दरवाज़ा खटका। एक मोटी महिला कचरा फेंकने बाहर आई। वह आदमी तीर की तरह अपने क्वाटर में भाग गया। बिलौटी को इस खेल में मज़ा आया। यह क्रम कई दिन चला।

गर्मियों की उमस भरी दुपहर थी। पोस्ट-आफिस के लेटर बॉक्स के समीप वह आदमी खड़ा था। बिलौटी ने देखा, पगली मां सो रही है। आदमी उसे मुसलसल घूरे जा रहा था। फिर वह अपने क्वाटर की तरफ चला गया। सड़क किनारे लगे गुलमोहर और पीपल के पत्ते झड़े रहे थे। बेहद गर्म दुपहर, बिलौटी का कंठ सूखने लगा था। मिट्टी का घड़ा, जिसका मुंह टूटा था, पानी ठंडा कर पाने में असमर्थ था। श्शायद उसके असंख्य छिद्र बंद हो चुके थे। पानी पी कर उसे कुछ सुकून मिला। उस आदमी का प्रकट होना और फिर ग़ायब हो जाना, रहस्यात्मक था। पगली मां भीख मांग कर आज कुछ देर से आई थी और खा-पीकर बेसुध पड़ी थी। बिलौटी उठकर पीछे नाली की तरफ चल दी। कचरा पेटी के पास पहुंची ही थी कि वह आदमी पेंट-शर्ट पहने पिछला दरवाजा खोल, अचानक नमूदार हुआ। वह इशारे से उसे बुला रहा था। बिलौअी के होशो-हवास गुम हुए। स्वाभाविक चाल चलता वह उसके पास आ पहुंचा। बिलौटी उसके साथ पिछले दरवाजे से उसके घर चली गई। अब वह

उसके आंगन में थी। आंगन में अमरूद का पेड़ था, जिसके पीले, सूखे पत्ते झड़े हुए थे।

वह आदमी अब बरामदे में खड़ा उसे घर के अंदर दाखिल होने का इशारा कर रहा था। उसके पीछे-पीछे बरामदे से होते हुए वह उस कमरे में आ गई, जहां प्लास्टिक की चार कुर्सियां, एक चाय की टेबिल, एक चौकी और कोने में एक रंगीन टीवी रखा था। रंगीन टीवी पर गाने आ रहे थे। बिलौटी को 'घरनुमा' माहौल की पहली अनुभूति सुखद लगी। कमरा ठंडा था। बाहर की खिड़की पर लगा 'कूलर' ठंडी हवा फेंक रहा था। कूलर की तेज़ आवाज़ के कारण गाने की आवाज़ कम सुनाई दे रही थी। वह ज़मीन पर बैठने लगी। आदमी उसे चौकी पर बैठने को कह अंदर दूसरे कमरे में चला गया। चौकी पर नरम-मुलायम गद्दा बिछा था, जिस पर बड़े-बड़े पीले फूलों के छाप वाली चादर डली थी। गद्दे पर वह झिझकते हुए बैठी। सिकुड़ी-सिमटी सी ताकि चादर मैली न हो जाए। उसे अपनी फटी-पुरानी फ्राक पर शर्म आने लगी। जाने किसकी उतरन पगली मां ले आती है, फिर थिगड़ी-सिलाई के बाद बिलौटी को पहनाती। इसके पहले अपने कपड़ों से इस तरह नफ़रत उसे और कभी न हुई थी।

आदमी लौट आया। उसके एक हाथ में क्रीम वानी बिस्किट थी। आदमी भी चौकी पर उसकी बगल में बैठ गया और बिलौटी की तरफ बिस्किट बढ़ाया। संकोच के साथ बिलौटी ने बिस्किट लिया और कोने से कुतरने लगी। ये क्या....इतना कुरकुरा, मुंह के अंदर इतना घुलनशील, इतना सुगंधित मीठा बिस्किट।

पहली बार मिले इस स्वाद से उसका बाल मन तृप्त हुआ। उसने आदमी को कृतज्ञ नज़रों से देखा। आदमी फिर से अंदर चला गया। अब जो लौटा तो उसके हाथ में प्लास्टिक की बोतल थी। बोतल का पानी गिलास में उड़ेल कर उसे दिया। बिलौटी गिलास छूते ही चकरा गई। एकदम ठंडा पानी। गिलास के बाहर की सतह पर ओस सी जम गई थी। गटगटा कर वह पानी एक सांस में पी गई। उसने महसूस किया कि ठंडा पानी किस तरह, किन-किन रास्तों से उसके पेट में पहुंच रहा है। उसे बहुत मज़ा आया। एक गिलास पानी और मांग कर पी गई वह। आदमी उसकी बगल में इत्मीनान से बैठ गया और उसका नाम पूछा। उसने दुबारा नाम पूछे जाने पर अपना नाम बताया-''बिलौटी..''

आदमी नाम सुनकर, उसके चेहरे पर बिल्ली सी भूरी आंखों को गहरे से देखते हुए कहा-''आते रहना, मौका देखकर।''

वह चुप रही।

आदमी ने उसके रूखे बालों को सहलाते हुए उसे अपने ऊपर खींचा। आदमी का स्नेहिल स्पर्श उसे सुखद लगा। वह खिंची चली गई। अब वह उसकी गोद में थी। पगली मां का उसे रत्ती भर भी ध्यान न था। सामने टीवी पर गाने के दौरान हीरोईन ठीक उसी तरह हीरो की गोद में बैठी थी। हीरो उसे दुलार रहा था। आदमी ने उसे बाहों में भर लिया। बिलौटी का दम घुटने लगा। उस आदमी के चेहरे पर तनाव के लक्षण नज़र आए। गाल तनतना कर लाल हुए जा रहे थे। उसकी सांसें ऊबड़-खाबड़

रास्तों पर अनियंत्रित भागने लगीं। बिलौटी की हालत भी कोई अच्छी न थी। अनजानी आशंकाओं से वह भयभीत हो उठी और रोने लगी। आदमी उसे चुप कराने लगा। इसी दरमियान उसने बिलौटी का मुंह चूम लिया। बिलौटी को अच्छा लगा। अचानक आदमी कांपने लगा। बड़ी ज़ोर से उसने बिलौटी को भींचा। लगा कि उसका दम अब निकला कि तब। फिर वह गद्दे पर लुढ़क गया। उसकी सांस ऐसी भाग रही थी ज्यों कोसों दूर से दौड़ता चला आया हो। फिर उसकी बांहों में भींचे-भींचे वह शांत हो गया।

उसकी पकड़ ढीली हुई तो बिलौटी छिटक कर अलग हो गई। आदमी लेटे-लेटे ही जेब से पांच रूपए को एक नोट निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दिया। वह चकित थी। किस बात के पांच रूपए वह दे रहा था, वह समझ न पाई। फिर भी रूपए लेकर वह भाग गई।

पांच रूपए उसके लिए काफी माईने रखते थे। उसे चुपचाप खपाना उस अकेले के बस की बात नहीं थी। उसके सामने यह एक नई समस्या आ गई थी। पगली मां जान जाएगी तो बिलौटी उससे क्या बहाना बताएगी?

ऐसे कठिन समय मे अंडे वाली बुढ़िया की पोती सनीचरी ही बिलौटी का एकमात्र सहारा थी।

सनीचरी थी एक नम्बर की चटोरी-खर्चीली। उसने बिलौटी से ज्यादा जिरह न की, बस दोनों चुपचाप अनपरा बाजार तक दौड़ती-कूदती पहुंच गईं।

वहां दोनों ने चाट-पकौड़ी खाई, क़ीपती बिस्किट खरीदा। वह बिस्किट इतना लजीज़, मीठा, घुलनशील और कुरकुरा तो न था, लेकिन फिर भी बिलौटी उस स्वाद से इस स्वाद की तुलना कर बैठी।

एक टेलीविज़न की दुकान के सामने घंटा भर दोनों खड़ी रहीं। वहां आठ-दस रंगीन टीवी पर किसी विदेशी चैनल का एक ही दृश्य दिखलाया जा रहा था। समुद्र के किनारे विदेशी औरतें बिकनी पहने धूप की सेंक का आनंद उठा रही हैं। कहीं औरतें और मर्द बिंदास आलिंगनबद्ध हैं। समुद्र की आती-जाती लहरों पर कई मर्द-औरतें अठखेलियां खेल रहे हैं। सनीचरी ने जब देखा कि टीवी दुकान का छोकरा उन्हें बड़ी देर से घूर रहा है तब उसने बिलौटी का हाथ दबाया और दोनों ने सोचा कि अब घर लौटा जाए वरना बड़ी कुटाई होगी।

स्नीचरी, बिलौटी से दो-तीन साल बड़ी थी। नाटे क़द की दुबली-पतली लड़की। झबरे-लटियाए बाल। सनीचरी की फ्राक के सीने के हिस्से पर मैल जमा होकर उभार का आकार लेने लगा था। लौटते समय दोनों नाले के किनारे आमने-सामने बैठ कर फारिग होने लगीं।

सूरज डूबने वाला था।

उन्हें लौटना भी था।

नाले के पानी से शौचते समय सनीचरी का पैर फिसला और वह गिर पड़ी। उसकी फ्राक गीली हो गई।

सनीचरी फ्राक उतारकर निचोड़ने लगी।

बिलौटी उसकी छाती के नन्हे उभारों को देख हंसने लगी। तब सनीचरी ने बताया कि उसके भी तो उगेंगे।
फिर हाथों से कटोरेनुमा आकार बनाकर बताया-''ये इत्ते बड़्डे-बड़्डे होंगे स्साली!''
लौटकर दोनों चिड़िया जब अपने घोंसलों में पहुंची, तब रात घिर आई थी। लोग दिया-बत्ती जला चुके थे। पगली मां बिलौटी को देख सनक गई और मोटी-मोटी गालियों से उसका स्वागत किया
फिर वह बिलौटी को पीटने लगी।
बिलौटी का अनपरा बाजार का सारा खाया-पिया बराबर हो गया। सारी मस्ती निकल गई। हां, मार खाकर बिलौटी ने सोचा कि चलो हिसाब-किताब बराबर हुआ। अब पगली मां बैठकर घण्टों रोएगी। मां मारती ज़रूर है, लेकिन कमज़ोर जगहों पर कतई नहीं कि बिलौटी मारे दर्द के बिलबिला जाए। बस, झोंटा पकड़कर खींचते हुए पीठ पर दनादन मुक्के बरसाती है मां। कभी बहुत ज्यादा नाराज़ होने पर छड़ी उठाकर पीठ पर मारती है मां। इतने से बिलौटी पर क्या असर पड़ता।
मार का असर कम हुआ तो बिलौटी उठी।
अंगीठी पर कोयला बीन कर डाला और फिर पगली मां की बगल में आकर लेट गई। थकी-मांदी तो थी ही, झट गहरी नींद की आगोश में चली गई।

•

बिलौटी के दिन मज़े में बीत रहे थे।

उसे इस नए खेल में मज़ा आ रहा था।

हर दूजे-तीजे दिन, सुनसान का फ़ायदा उठाकर पिछले दरवाज़े से बिलौटी उस आदमी के क्वार्टर में चली जाती और पांच-दस रूपए का जुगाड़ बना लेती।

पिछला दरवाज़ा तभी खुला मिलता जब आदमी घर में अकेला होता, अन्यथा दरवाज़ा बंद ही रहता।

मज़े की बात यह थी कि बिलौटी के साथ ऊपरी छेड़छाड़ के अलावा वह अन्य कोई बलात् हरक़त नहीं करता था। बिस्किट खिलाता, मिठाई, िफ्रज़ का ठंडा पानी या शरबत पिलाता, गोद में बिठाता, प्यार-दुलार करता। कभी सीने से लगाकर ज़ोर से भींचता, कभी गाल को थूक से भर देता। ऐसे समय बिलौटी को उस आदमी के खूंटी उगे गाल और दाढ़ी की चुभन सुखद लगती। कभी-कभी वह बहुत हड़बड़ाया हुआ होता और बिलौटी को अपनी टांगों के बीच कस लेता। ऐऐ समय वह इस तरह हांफता जैसे मीलों दौड़कर आया हो। वह हांफते-हांफते निढाल हो जाता। उसकी सांसें नियंत्रण से बाहर हो जातीं। आंखें मुंद जातीं। फिर वह थक जाता और बिलौटी उसके चेहरे पर थकान की इबारत साफ़-साफ़ पढ़ लिया करती।

बिलौटी जानती थी कि अब जब उसकी चेतना लौटेगी तब वह बहुत बेचैन होकर उसे घर से बाहर निकालने की जुगत करेगा।

पता नहीं क्यों थकान के बाद उस आदमी के मन पैदा हुई विरक्ति से बिलौटी को चिढ़ हुआ करती।
ऐसे हालात में बिलौटी को जवान होने के लिए साल या माह की ज़रूरत न थी। वह दिन-प्रतिदिन उम्र का एक-एक बरस लांघ-कूद रही थी। उसके चेहरे पर नमक दिखने लगा था। कूल्हे आकार लेना चाहते थे। सपाट सीने पर नुकीले उभार कशमकश कर बाहर आना चाहने लगे तो पगली मां का दिमाग ठनका।
पगली मां ने देखा कि सनीचरी और बिलौटी के बीच फुसफुसाहटें बढ़ती जा रही हैं। वे गुप-चुप बात कर अनायास हंसने लगती हैं। फिर पगली मां को देख हठात चुप भी हो जाती हैं।
बिलौटी की सयानी होती देह के कारण पगली मां गुस्साकर उसे खूब गरियाती-लतियाती, लेकिन क्या इससे बिलौटी की देह की बढ़त पर लगाम लगता?
पगली मां न चाहती कि बिलौटी उसकी नज़र के सामने से तनिक देर भी ग़ायब रहे। लेकिन बिलौटी मां की आंखों में धूल झोंककर उस आदमी के क्वार्टर चली ही जाती।
वह जो भी चाहता, बिलौटी आंख मूंदकर मान जाती।
वह आदमी उसका एक दोस्त सा बन गया था।
उसने ही चर्चा के दौरान बिलौटी को बताया था कि पगली मां के पास कभी-कभी आने वाले रमाकांत की भूरी-बिल्ली आंख और बिलौटी की बिल्ली जैसी भूरी आंख में समानता क्यों है?

उसे पगली मां से घृणा होती। जबकि उसका अपना जीवन खुद पथरीली राह का मुसाफ़िर था!
वह देखती कि कालोनी की उसकी हमउम्र लड़कियां कितनी चहकती रहती हैं। स्कूल बस में वे गाती-गुनगुनाती स्कूल जाती हैं। स्टेंड छोड़ने आए अपने मम्मी-पापा से कितना ज़िद करती हैं, इठलाती हैं ऐसे कि जैसे उनकी नाक से दूध जा रहा हो! जबकि उन लड़कियों की उम्र सनीचरी से भी ज्यादा होगी। तीज-त्योहारों पर ये लड़कियां स्वप्न-लोक की परियों सी उड़ती, फुदकती रहती हैं।
एक सुबह जब बिलौटी सोकर उठी तो उसका सारा जिस्म दर्द से ऐंठ रहा था। उसने अपना माथा छूकर देखा तो लगा बुखार हो उसे। पेट के निचले हिस्से में भी मीठा-मीठा सा दर्द कोंचे जा रहा था।
उसने फ्राक उठाकर अपना पेट सहलाया और जब उसकी अंगुलियां चढ़ आई चड्डी ठीक करने लगीं तो उसे कुछ गीलापन महसूस हुआ। हाथ बाहर किया तो वह अवाक रह गई। अंगुलियां खून से सन गई थीं। वह डर कर रोने लगी। उस आदमी के संसर्ग से वह इतना तो जान गई थी कि औरत की देह में एक मार्ग ऐसा भी होता है, जिस पर चलने के लायक अभी वह हुई नहीं है। किन्तु क्या रात अनजाने में उसने ऐसा कोई ऐसा सफ़र तय तो नहीं कर लिया, जिस पर अभी उसे नहीं चलना था।
बिलौटी सिसक-सिसक कर रोने लगी।

उसे अपनी मां के पागलपन के कारण भी रोना आ रहा था।
पगली मां सुबह-सुबह उसका रोना सुनकर घबरा गई और एक मोटी सी गाली देकर बिलौटी से रोने का कारण पूछा।
बिलौटी को पहली बार अपने जिस्म से नफ़रत हुई और अपनी दशा पर शर्म भी आई।
उसने पगली मां के सामने अपनी फ्राक उठाई।
पगली मां ने जब खून से भीगी उसके अंतर्वस्त्र देखे तो वह हंसने लगी।
उसने बिलौटी को राज़ की कुछ बातें बताईं।
सनीचरी आई तो बिलौटी उससे लजाने लगी।
पगली मां ने बिलौटी की नादानी का किस्सा उसे बताया।
सनीचरी भी खूब हंसी फिर उसने बिलौटी को बताया कि इस उम्र से 'अइसई' होना शुरू हो जाता है, इससे 'काएको' घबराना रे!
बिलौटी तो समझ गई उसकी बात और एक बात अच्छी तरह जान गई कि अब बचपन अचानक उसके पास से जुदा हो गया है।
अब वह सयानी हो गई है।
अब यदि नादानी हुई तो उसके गम्भीर परिणाम उसे भुगतने पड़ सकते हैं।
पगली मां ने बिलौटी के उठने-बैठने पर अघोषित प्रतिबंध लगाने लगी। उसे समाज और संसार की ऊंच-नीच के बारे में अपने अर्जित ज्ञान से दीक्षित करने का प्रयास करने लगी।

उचित शब्दावली के अभाव में पगली मां जब कोई बात को समझा न पाती तब फिर गालियां और लात-जूते की भाषा का सहारा लेती।

सनीचरी ने बिलौटी को पुराने कपड़े की 'पेड' बनाकर उपयोग करना सिखा दिया, ताकि महीने के उन चंद दिनों में उसे परेशानी न हो।

हां, पगली मां ने एक फटी-पुरानी राजस्थानी साड़ी का आंचल फाड़कर बिलौटी को दिया कि अब इस दुपट्टे से वह अपना सीना ढांककर रखा करे।

बिलौटी उम्र के जिस पड़ाव पर थी वहां ऊंच-नीच, पाप-पुण्यत्र लाभ-हानि, जात-बिरादरी, आदि शब्द निरर्थक और बेकार थे।

किशोरावस्था तो सपने देखने की उम्र होती है।

यह उम्र रीति-रिवाज़ों की धारा बदल देने की क्षमता रखती है।

इस उम्र में इंसान के अंदर अद्भुत उर्जा होती है।

इस उम्र में इंसान खुद रास्ता तलाशना और फिर उस पर निडर चलना चाहता है। वह नहीं चाहता कि कोई उसे बच्चा समझे और क़दम-क़दम पर उसे 'गाईड' करे। वह खुद अपना भाग्य-विधाता बनना चाहता है।

एक दिन सनीचरी ने बिलौटी से उसकी जाति जाननी चाही। तब बिलौटी मौन रह गई।

उसने आज तक इतने सवालों का सामना किया था, लेकिन जाति वाली बात तो आज तक किसी ने न की और न ही उसे इसकी ज़रूरत पड़ी थी।

तब सनीचरी ने स्वयं बताया कि बिलौटी 'चमार' है।
बिलौटी ने हंस कर मान लिया।
उसे क्या फ़र्क पड़ता यदि वह राजपूत होती या फिर 'बामन' होती।
और फिर 'चमार' होना या बन जाने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं पड़ती और न किसी गौरवशाली वंश-वृक्ष की ही। चमार कहलाए जाने पर ऐसा भी नहीं है कि चमार लोग विरोध करें। हां, यदि उसे खुद को बाभन, राजपूत, कुर्मी, भुमिहार, अहीर आदि बड़ी जातियों से जोड़ने की ज़रूरत पड़ जाए तो बेशक सम्बंधित जातियों के लोग उसका विरोध कर सकते हैं।
बिलौटी ने पगली मां से अपनी जाति के बारे में जानना चाहा तो वह मौन बैठी रही।
दुबारा-तिबारा पूछे जाने पर तमाम ज्ञात-अज्ञात जातियों को मां-बहिन की गालियां बकने लगी। बिलौटी की वही अध्यापक थी, वही स्कूल, वही कोर्स की किताबें, वही परीक्षक भी। वैसे भी बड़े-बड़े स्कूलों से पढ़े आलिम-फाजिल बिना नौकरी बेकार घूमते हैं, पगली मां की पाठशाला से गालियों का पाठ सीखकर यदि बिलौटी भी बेकार थी तो इसमें क्या आश्चर्य...
बिलौटी का जीवन पुन: पुराने ढर्रे पर चलने लगा।
पगली मां उसके लिए कहीं से मांग कर साड़ी-लहंगा और ब्लाउज़ ले आई।

जब वह साड़ी-ब्लाउज़ पहनी तो मारे हंसी के सनीचरी लोटपोट हो गई।
ब्लाउज़ बहुत बड़ा झोलंगा सा था। ऐसा लग रहा था कि किसी ठूंठ पर कपड़ा डाल दिया गया हो। जैसे कि बिजूका!
सनीचरी के पास ब्लाउज़ की साईज़ कम करने का आईडिया था।
वह घर से सुई-धागा ले आई।
आस्तीन और साईड को मोड़कर सुई-धागे से सी दिया कि ब्लाउज़ की 'फ़िटिंग-टाईट' हो गई। अब ब्लाउज़ बिलौटी के बदन पर फिट बैठा। इसी तरह लहंगे को भी नीचे से मोड़कर छोटा कर दिया गया था। साड़ी-ब्लाउज़ पहनकर बिलौटी ऐसी दिखने लगी, जैसे वह कोई लड़की न हो बल्कि औरत हो। पगली मां को बिलौटी के इस रूप से प्यार हुआ। पगली मां, आंगन में फेंकी गई टुटही कंघी लेकर बिलौटी के बाल बड़े प्यार से संवारने बैठ गई। बिलौटी अपनी मां के इस आदत में बदलाव से बड़ी अचरज में थी।

•

यही उसी दिन की बात है।
जब शाम के ढलने पर आदतन घूम-फिर कर पगली मां लौटी तो काफी खुश थी।

बिलौटी ने मां का चेहरा इतना प्रसन्न कभी न देखा था। सूखे छुहारे से निस्तेज चेहरे पर मुस्कुराहट की लकीरें उसके चेहरे को अजनबी सा बना दे रही थीं। उसने मां की खुशी का कारण जानना चाहा।

पगली मां ने बताया कि यादव पुलिसवाले के छोटे भाई भूनेसर यादव को कॉलोनी मे कचरा-सफाई का ठेका मिला है। रमाकांत और भूनेसर पक्के दोस्त हैं। संग दारू पीते हैं और छिनरई भी साथ ही करते हैं। रमाकांत की सिफ़ारिश पर भूनेसर यादव ने पगलिया और उसकी बेटी बिलौटी पचास क्वाटरों के क्षेत्र की सफाई की जिम्मेदारी सौंपी है। पगली मां को अपने दम काम न मिल रहा था, इसलिए रमाकांत के कहने पर पगली मां बिलौटी को भी साथ लाने को तैयार हुई।

बिलौटी रमाकांत को जानती थी कि वह उसका बाप है, लेकिन भूनेसर यादव उसे फूटी आंख यन भाता था। रमाकांत के साथ कभी-कभी भूनेसर यादव जब पगली मां के पास आता तो वह उसे घूर-घूर कर देखा करता था।

बिलौटी ने सोचा कि कहीं उसे अपने चंगुल में फांसने के लिए तो भूनेसर यादव ने पगली मां को काम पर रखा है? ख़ैर, वजह चाहे जो हो, हां, खाली पड़े-पड़े जीवन गुजारते बिलौटी ऊब रही थी। इसलिए उसने मां को हामी भर दी।

फिर वह सनीचरी के साथ दोपहर के समय कॉलोनी भी चली गई, ताकि काम का जायज़ा ले ले। सनीचरी ने उससे भी काम दिलवाने की सिफ़ारिश की, लेकिन बिलौटी ये कहकर टाल गई

कि पहले देखते हैं कि काम किस तरह का है और ''ई ठीकेदार ससुरा पईसा-वईसा मारता तो नहीं।''

कोयले की खुली-खदान के कर्मचारियों को अच्छा वेतन मिलता था और पदानुसार उन्हें सरकारी आवास भी आबंटित होता था। पचास क्वार्टरों का जो क्षेत्र बिलौटी और पगली मां की टीम को सफाई के लिए मिला था, उस कॉलोनी का नाम सेक्टर-सी था। तीन-तल्ला मकान का एक ब्लाक, जिसमें छः क्वार्टर थे। हर ब्लाक के चारों तरफ बाउण्डरी थी।

बिलौटी लोगों का दायित्व था कि हर ब्लाक की साझा सीढ़ी के कचरे और बाउण्डरी-वाल के बाहर फेंके गए कचरे की सफार्ई प्रतिदिन की जाए।

सप्ताह में एक बार ट्रेक्टर आएगा, जिसकी ट्रॉली पर कचड़ा भरने का जिम्मा भी उन्हीं लोगों की टीम का होगा।

अगली सुबह जब पगली मां और बिलौटी भूनेसर यादव के ठीहे पर गए तो देखा कि वहां उनके जैसे कई मज़दूर और रेजाएं काम बंटने की प्रतीक्षा में हैं।

अभी ठीकेदार भूनेसर यादव अपने डेरे से बाहर नहीं निकले हैं। सुबह की धूप अब तीखी हुआ चाहती है। कहीं छांह का नामो-निशान नहीं।

सभी मज़दूर इधर-उधर गुट बनाए बैठे या फिर खड़े गपिया रहे हैं

पगली मां और बिलौटी जब वहां पहुंची तो देखा कि वहां मज़दूर लोग उन्हें देखते ही चुपा गए। एक सन्नाटा सा छा गया।

सभी बिलौटी और पगली मां की इस कामगार जोड़ी को देख अचंभित थे।
वैसे भी पगली का इस क्षेत्र में आना, फिर उसका गर्भवती होना और बिलौटी का उत्पन्न होना एक बतकही का मसाला तो था ही। सब जानते थे कि पगली अपने जवानी के दिनों में कई 'समरथ' लोगों का एक खिलौना थी। मनबहलाव का साधन। इसी से उसकी रोजी-रोटी चल रही थी।
रमाकांत और पगली प्रसंग कोई ज्यादा पुरानी घटना तो थी नहीं।
किशोरवय बिलौटी उन मज़दूरों के आकर्षण का केंद्र बन गई। वाकई वह साड़ी-ब्लाउज़ में खूब जंच रही थी।
मज़दूर औरतें सोच रही थीं कि अब ठीकेदार जब तक इस लड़की को खराब न कर लेंगे तब तक चैन से न बैठेंगे। हां, तब तक उन लोगों की जान बची रहेगी।
बिलौटी ने उनकी तरफ ध्यान न दिया और भूनेसर यादव की प्रतीक्षा करने लगी।
नौ बजे के करीब भूनेसर यादव अपने मुंशी के साथ डेरे से बाहर आया और मुंशी लोगों को काम और जुगाड़ बांटने लगा।
पगली मां भूनेसर यादव के पास गई और ठेकेदार ने मुंशी को उन्हें एक बेलचा, झाड़ू और एक तसला देने का आदेश दिया।
बेलचा, झाड़ू और तसला पाकर बिलौटी खुश हुई।
बीस रूपए डेली की हाजिरी और सप्ताह में एक दिन छुट्टी।
यानी चालीस रूपए रोज़ की आमदनी होगी।

इस तरह पच्चीस दिन के एक हज़ार रूपए...
बिलौटी की आंखें फैल गईं।
एक हज्ज्ज्ज्ाार रूपिया....महीना....
मां-बेटी ने मिलकर अपने ब्लाक की अच्छे से सफाई की।
हां, सफाई के दौरान एक पतली-दुबली छोकरी सी औरत ने क्वार्टर से निकल कर उन्हें खाने के लिए डबल-रोटी दी और मुस्कुराई भी।
ऐसी ही एक और दयालु महिला थी वहां, जो कि इसाई नर्स थी।
दुपहर में वह काम से लौटी तो पगली मां और बिलौटी को बाउण्डरी-वाल के साए में सुस्ताए हुए पाया।
सफेद-झक कपड़े पहने उस नर्स ने बिलौटी से पूछा-''क्या रे, इदर क्या करता तुम लोग?''
तब बिलौटी ने बताया कि उन लोगों को आज से इस ब्लाक की सफाई का काम मिला है।
नर्स सुनते हुए तीन-तल्ला में जा समाई।
फिर दूसरे माले की बालकोनी पर नर्स नज़र आई।
उसके हाथ में एक पोलीथीन का पैकट था।
उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई-''एई...लड़की!''
बिलौटी दौड़कर बालकोनी के नीचे जा खड़ी हुई।
तब नर्स ने ऊपर से वह पोलीथीन का पैकट नीचे गिरा दिया जिसे बिलौटी ने लपक लिया।
उस पोलीथीन में केक के टुकड़े थे।

सच, बिलौटी पिछवाड़े वाले उस आदमी की संगत में खाद्य-पदार्थों की कई वेराइटी से परिचित हो चुकी थी।
केक उसे वाकई बहुत पसंद था।
मां-बेटी भुखमरों की तरह केक पर टूट पड़ीं।
खा-पीकर एक बार पुनः दोनों सफाई के काम में जुट गईं।
तीन-तल्ला की सीढ़ियों की सफाई तो आधा घण्टा का काम था।
बाउण्डरी-वाल के पीछे पड़े कचरे को बीन कर कचरा-पेटी में भरने में ज़रूर समय लगा, लेकिन शाम चार बजे तक दोनों फुर्सत पा गईं।

•

उस रात बिलौटी और पगली मां को बहुत गहरी नींद आई।
बिलौटी की नींद मर्दाना खुसुर-पुसुर की आवाज़ से खुली।
पता नहीं रात के कितने बजे होंगे।
हां, लगा कि रमाकांत और ठीकेदार भूनेसर यादव आए हुए हैं।
दोनों पिए हुए हैं।
बिलौटी का कलेजा धुकधुकाने लगा।
उसने अधखुली आंखों से माहौल का जाएज़ा लेना चाहा।
ऐसा लग रहा था कि वे दोनों पगली मां को किसी बात पर राज़ी करना चाहा रहे हैं।

पगली मां बड़ी तन्मयता से उनकी बातें सुन रही थी।
मेन रोड पर बनारस जाने वाली रात्रि-सेवा बस का हार्न गूंजा।
भूनेसर यादव और रमाकांत उठ खड़े हुए।
उनकी फटफटिया स्टार्ट हुई और उनके जाते-जाते पगली मां की गालियां उन पर बरसने लगीं-''दहिजरवा के नाती, हर्रामी आपन बिटिया के संग सोवे का चाहत है...!''
इन गालियों के आगे फटफटी कहां रूकती।
बिलौटी को माज़रा समझ में आ गया।
रात भर पगली मां नींद में बड़बड़ाती रही।

•

पगली मां और बिलौटी को कचरा-सफाई के काम पर लगा देख लोगों को हैरत हुई।
चौराहे की पान गुमटी पर शर्तिया भविष्यवक्ताओं के मुंह लटक गए।
'ई पगलिया की बिटिया, किसी डराईबर या खलासी के संग भग जाएगी!''
लोगों का क़यास ग़लत साबित हुआ।
उनकी अटकल-बाजियों से बेपरवाह पगली मां बड़ी तन्मयता से झाड़ू बुहारती और फिर बेलचा की मदद से कचरा तसले पर

डाल देती। उस तसले को सिर पर उठाकर बिलौटी बाउण्डरी के बाहर बने कचरा-पेटी में पलट आती।

इस नव-जीवन का आनंद मां-बेटी ने खूब लिया।

पहली बार उन दोनों ने श्रम की महत्ता को जाना।

दिन-भर की हाड़-तोड़ मेहनत के बाद रात में उन्हें ज़बरदस्त नींद आती।

कचरा कभी खत्म न होता और न उन्हें इधर-उधर सोचने की फुर्सत मिलती।

पगली मां भी मेहनत के कारण थकी-थकी रहती और अब वह लोगों को अकारण गालियां भी न बकती थी।

इधर एक बात बिलौटी ग़ौर कर रही थी कि ठीकेदार भूनेसर यादव उस पर अतिरिक्त रूचि ले रहा है। बिलौटी जिस पाठशाला की छात्रा थी, उसका कोई प्रिंसीपल, हेडमास्टर या फिर टीचर नहीं हुआ करता। वहां का पाठ्यक्रम किसी राज्य-सरकार या केंद्र सरकार द्वारा संचालित नहीं होता। बिलौटी की पाठशाला के पाठ्यक्रम में व्यवहारिक-ज्ञान के अध्याय हुआ करते थे। ऐसा ही एक विषय दूसरों की निगाह की भाषा पढ़ने-समझने का था। बिलौटी उसमें पारंगत थी।

बिलौटी ने भूनेसर यादव ठेकेदार की निगाहों की भाषा का अनुवाद भी कर लिया था।

भूनेसर यादव अब अक्सर सेक्टर-सी की साईट पर काम के निरीक्षण के बहाने से आता तो पगली मां के पास आठ-दस

मिनट समय देता और घूरे पर जहां बिलौटी कचरा डालने जाती कुछ ज्यादा समया दिया करता।
वह बड़े मनोयोग से बिलौटी को कचरा का तसला उठाए आते-जाते देखा करता।
बिलौटी जब घूरे के अंदर कचरा फेंकने के लिए जब तसले को दोनों हाथों से ऊपर उठाती, तो ब्लाउज़ के अंदर आकार ग्रहण करते उभारों की झलक मिलती। भूनेसर यादव ऐसे कोण से उसे निहारता, जिससे कचरा उलटती बिलौटी के जिस्म को साईड से और पाश्र्व-भाग का वह सूक्ष्म निरीक्षण कर सके।
बिलौटी भूनेसर यादव की निगाहों की मार से अन्जान न थी। उसे अपने जिस्म के तमाम ढंके-छिपे हिस्सों पर भूनेसर यादव की निगाहों की चुभन बहुत देर तक महसूस हुआ करती थी। उसे ये सब अटपटा भी लगता था और अच्छा भी।

•

भूनेसर यादव यूपी का अहीर था।
खाया-पिया पट्ठा जवान।
आर्थिक आधार मज़बूत था, सो उसके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास के कारण दबंगई की झलक भी मिल जाती थी।
वह सुदर्शन था, पैंतीस-छत्तीस साल का खेला-खाया युवक, तराशी हुई मूंछें, संकरे माथे पर ढेर सारे बाल, कुर्ता-पैजामा

और काली जैकेट उसकी विशिष्टता थी। संभवत: रात बिस्तर पर भी वह 'ऐसई' सोता होगा।
उसके पास एक मोटर-साईकिल थी, जिस पर सवार होकर वह दौड़-धूप किया करता।
जब से पगली मां और बिलौटी को काम मिला था, उन लोगों ने भीख मांगना बंद कर दिया था। घर में पैसे आने से खान-पान और कपड़े-लत्ते की व्यवस्था ठीक हो गई थी।
भूनेसर यादव माह भर बाद पगली मां के पास एक प्रस्ताव लेकर आया।
वह चाहता था कि पगली अपनी किशोरी बेटी के साथ आजाद-नगर स्थित उसके आवास के आसपास बस जाए।
जीटी रोड और रेलवे लाईन के बीच की सरकारी जगह पर मजदूर और ठेकेदारों ने क़ब्ज़ा कर लिया था। वे वहां झोपड़ियां और मकान बनाकर गुजर-बसर करते। कोयला-खदान का अधिकतर काम ठेकेदारी श्रमिकों पर निर्भर था, लेकिन उनके लिए स्थाई-निवास का कोई प्रावधान न था। इसलिए ऐसे ठेकेदार और श्रमिक इस नई बस्ती में जीवन-यापन करते।
कोयले की खुली खदान में कोयले के साथ पत्थर-मिट्टी भी बाहर यार्ड में आ जाया करता था। बेचने से पूर्व उस कोयले से मिट्टी-पत्थर की अशुद्धि को छांट-बीन कर निकाल फेंकने का काम ठेकेदारी-श्रमिकों के ज़रिए किया जाता था। इस काम में सैकड़ों मज़दूर लगते। साथ ही कॉलोनी, सड़क, पुल, टंकियां

और रेलवे-लाईन आदि निर्माण कार्य में हज़ारों की तादाद में इस इलाके में मज़दूरों की खपत है।
ये मज़दूर देश के लगभग सभी प्रांतों से यहां आते हैं।
उन लोगों ने अपनी बस्ती को एक नया नाम भी दे दिया था-
''आज़ाद नगर''
आजाद-नगर यानी भारतीय संविधान की तमाम धाराओं, उपधाराओं, अनुच्छेदों, नियम-कानूनों से आजाद नगरी।
यहां अधिकार की भावना का बोध तो था लेकिन कर्तव्य के प्रति उदासीनता देखी जाती थी।
हां, प्रशासन, व्यवस्था और सरकार के लिए यहां सिर्फ आरोप-प्रत्यारोप और धर-पकड़ की गुजाईश थी। भूख, बीमारी, बेकारी, गरीबी, मृत्यु की भरपूर आजादी का नाम था बस्ती आजाद-नगर। आजाद नगर में दारू भट्टी थी, कसाई-घर था, चांदसी दवाखाना था, गांजा-अफ़ीम के अड्डे थे, सट्टा-मटका के दलाल थे, रंडियां थीं और इर्ंधन के लिए पर्याप्त मात्रा में कोयला था।
आजाद नगर में पेयजल की व्यवस्था न थी।
नहाने-धोने के लिए नकटा-नाला का पानी उनकी ज्ारूरतों पूरी किया करता।
पीने के पानी के लिए कोयला-खदान की कालोनियों के लिए आजाद नगर से गुज़री पाईप-लाईन के लीकेज वाले पानी का इस्तेमाल तमाम आजाद नगर-वासी करते।
चूंकि आजाद नगर बस्ती कोयला खदान से सटी हुई थी, इसलिए कोयले में विस्फोट से या फिर डम्परों के आवागमन से

उड़ती धूल हवा के बहाव के साथ आजाद नगर के वायुमण्डल पर हमेशा छाई रहती।
शाम के समय, काम से लौटे मज़दूर अपनी-अपनी झोंपड़ियोंं में कोयले के चूल्हे या भट्टियां सुलगाया करते। इससे आजाद-नगर सुलगते-कोयले के सफेद धुंए से ढंक जाया करता।
आजाद नगर के पश्चिमी कोने मे कोयला-माफिया सुरिन्दर बाबू की दया से एक भव्य 'शिव-मंदिर' बना है। कहते हैं कि सुरिन्दर बाबू जब इस इलाके में आए थे तो एकदम्मे गरीब थे। जिस जगह शिव-मंदिर बना है, वहीं उनकी झोंपड़ी हुआ करती थी। वह कोयला के ढेर से मिट्टी-पत्थर छांटने वाले मज़दूर से तरक्की करते-करते, मेट-मुंशी हुए, फिर धीरे-धीरे स्वयं ठीका लेने लगे। जोड़-तोड़ का भाग्य चमका, क्योंकि तभी जो प्रोजेक्ट-ऑफीसर आया वह सुरिन्दर बाबू की बिरादरी का निकल गया और जिला-जवारी भी था। वैसे सुरिन्दर बाबू इस समीकरण को नहीं मानते, वह अपनी तरक्की का दारोमदार पूरी तरह भोलेनाथ भण्डारी पर डाल देते और बोल-बम का नारा बुलंद किया करते।
शिव-मंदिर तक कोयला खदान वालों ने पेयजल की पाईप-लाईन बिछवा दी थी।
शिव-मंदिर के आस-पास ज्यादातर ठेकेदार और मुंशियों के आवास थे। इसलिए ये लोग पेयजल की पूर्ति शिव-मंदिर से किया करते।

महाशिवरात्रि के अवसर पर सुरिन्दर बाबू इस शिव-मंदिर पर जल स्वयं चढ़ाया करते, इस मौके पर बनारस से उनका परिवार भी आया करता। वैसे सुरिन्दर बाबू अपने बंगले में अकेले ही रहा करते थे।

आजाद-नगर में भूनेसर यादव ने भी लगभग दो एकड़ के क्षेत्र में क़ब्ज़्ाा किया हुआ था। सीमेंट ईंट की बाउण्डरी धिरा था भूनेसर यादव का आवास।

पगली मां का घूमा-फिरा इलाका था आजाद-नगर का।

रमाकांत की ऐयाशियों का पुराना इतिहास आजाद-नगर के चप्पे-चप्पे में दर्ज था।

कभी-कभी तो पी-खाकर यारी-दोस्ती मे वह कई रातें आजाद-नगर में पड़ा रह जाता था।

पगली मां ने भूनेसर यादव के उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया जिसमे उसने कहा था कि वे लोग बस-स्टेंड के इस खुले माहौल से हट कर आजाद-नगर चले आएं। वहां भूनेसर यादव अपने आवास के आसपास उनके रहने की व्यवस्था कर देगा। सयानी होती बेटी बिलौटी की सुरक्षा के लिए ये प्रस्ताव मान लेना ही हितकर था।

वैसे एक तरफ कुंआ, दूसरी तरफ खाई वाली बात थी।

कचरा फेंकने वाले ट्रेक्टर में मां-बेटी ने सारा सामान लादा। सामान क्या था, कचरे का एक और ढेर ही तो था, जिसे सभ्य-समाज अमूमन फेंक दिया करता है। यही कचरा उन मां-बेटी की पूंजी थी, यही उनका सरमाया...

•

आजाद नगर पगली मां के सेहत का दुश्मन साबित हुआ। बस-स्टेंड के टिन-शेड में वह पंद्रह-सोलह साल बिता चुकी थी। टिन-शेड मे ंजहां दीवारों की ज़रूरत न थी। पोलीथीन-बोरियों से घिरे उसके उस आवास में एक दरवाज़ा भी था, जिसकी सिटकनी लगने पर भी आधा फुट का फांक बचा रह जाता था। वह एक खुला-खुला प्रजातांत्रिक देश की तरह अहसास कराती व्यवस्था थी।

भूनेसर यादव ने उन लोगों को अपने आवास के पिछवाड़े की एक झोंपड़ी ही दे दी थी।

बिलौटी और पगली मां के लिए किसी बंद कमरे सांस लेने का ये पहला अवसर था। उन्हें ऐसा लगा कि उनका दम घुट जाएगा।

भूनेसर यादव की इस मेहरबानी से पगली मां बहुत विनम्र हो गई थी। अव वह गालियां कम बकती। बिलौटी को पहले दिन तो वहां अटपटा लगा किन्तु सुख-सुविधाएं देख कर उसे लगा कि जैसे अभी तक वे लोग नरक-वास कर रहे थे।

मिट्टी की दीवारें जगह-जगह कबड़ गई थीं, लेकिन उन्हें थोड़ा प्यार से सहला देने मात्र से वे दीवारें अवश्य चिकना जाएंगी। छप्पर खपरैल की थी।

हां,मकान में पानी चूने के लक्षण दिखलाई नहीं पड़ रहे थे। इसका मतलब है कि ठीकेदार भूनेसर यादव झोंपड़ी की छानी

के खपरैल हर सीजन में 'फिरवा' देता है। हो सकता है कि भूनेसर यादव की वह ऐशगाह हो!

झोंपड़ी के बाहर अमरूद का एक पेड़ है। उसके आसपास की मिट्टी अच्छी चिकनी है। पगली मां ने फावड़ा लेकर मिट्टी खोद डाली और उस मिट्टी को पानी से गीला करके उसने झोपड़ी की दीवार को चिकनाने लगी।

बिलौटी कोलियरी के बाज़ार जाकर छूही मिट्टी ले आई। छूही मिट्टी से उसने झोपड़ी की दीवारों को लीप दिया।

पास के गांव से काली-मिट्टी ले आई बिलौटी और उससे झोपड़ी के फर्श को लीप दिया। बार्डर के तौर पर छूही मिट्टी की सफेदी कर दी गई।

अब उनकी झोपड़ी सज गई थी।

झोपड़ी के अंदर दो कमरे थे।

पहले कमरे के कोने में एक चूल्हा बना हुआ था।

इस कमरे को उन लोगों ने रसोई घर बना लिया।

अंदर कमरे में गुदड़ी-कथरी बिछाकर सोने की व्यवस्था कर ली गई।

दीवार पर एक रस्सी बांध दी गई, जो कपड़ा टांगने के काम आई।

झोपड़ी के बाहर एक कोने में पत्थर की एक सिल लाकर रखा गया और उसे तीन तरफ से बोरा-टाट से घेर कर स्नान-घर का रूप दे दिया गया।

अन्य निस्तार के लिए उन्हें नकटा-नाला जाना पड़ता।

वहां हमेशा मज़दूर औरत-मर्दों की भीड़ हुआ करती।
हंसी-मज़ाक का अच्छा माहौल बना रहता।
एक कपड़े में नहाना और फिर कपड़े बदलने की कला तो पगली और उसकी बिटिया बिलौटी को आती ही थी। यह एक 'एक्सरसाईज़' की तरह होता है। मां-बेटी दोनों इस कला में अभ्यस्त थीं। मर्दों का क्या, चौबीस घण्टे औरत की देह पर गिद्ध-दृष्टि गड़ाए रखना उनका धर्म होता है।
मज़दूर औरतें जानती थीं कि 'इस देखा-दाखी से उनकी देह खियाती थोड़े ही है।'
बड़ा उन्मुक्त वातावरण था नकटे-नाले का।
बिलौटी को ये सब नहीं भाता था, खासकर नाले का काला पानी।
कोयला-खदान से बहकर आया नकटे नाले का पानी काला हो चुका है। उसे लगता कि इस काले पानी से नियमित उपयोग से कहीं उसका बदन काला न हो जाए।
इसीलिए शिव-मंदिर से बिलौटी पानी ले आती थी।
वह झोपड़ी के बाहर बने अपने स्नान-गृह में ही उस पानी से नहाया करती।

•

इस अफरा-तफरी में पगली मां बीमार पड़ गई।
उसे जाड़ा देकर बुखार आया था।

बुखार था कि उतरने का नाम ही न लेता था। पगली मां की कमज़ोर देह बुखार से लड़ नहीं पा रही थी। हां, पहले वह जो गालियां बका करती थी, अब बुखार की हालत में वह गाली न बकती बल्कि समझदारी की बातें किया करती।

बिलौटी, अंदर कमरे में पगली मां के बिस्तर के पास एक पुराने तसले में लकड़ी जला दिया करती। उसकी आंच ताप कर पगली को कुछ राहत मिलती।

पता नहीं कहां से आसमान पर बादल आए और टिपिर-टुपुर बारिश की ऐसी झड़ी लगी कि लगा कि जाने कब मौसम की मनहूसियत दूर होगी।

मां की बीमारी के कारण बिलौटी काम पर जा नहीं पा रही थी। तीसरे दिन भी जब बुखार कम न हुआ तो बिलौटी ने सोचा कि अब ठीकेदार भूनेसर यादव से मदद लेना चाहिए।

भागी-भागी वह भूनेसर यादव के पास गई।

भूनेसर ने अपने मुंशी-मेट को भेज आजाद-नगर के बाहर डेरा जमाए बंगाली-डॅाक्टर को बुलवा लिया।

बंगाली-डॉक्टर ने पगली मों का मुआयना किया और फिर उसे कई इंजेक्शन लगाए।

वह अपनी डिस्पेंसरी में ही दवाएं भी रखा करता था।

उसने बिलौटी से कहा कि वह उसके साथ डिस्पेंसरी चली चले।

बिलौटी बंगाली-डॉक्टर से दवाएं लेती आई।

इलाज का सारा खर्च भूनेसर यादव ने उठाया था।

पगली मां की हालत में कुछ सुधार आया, तो बिलौटी ने सोचा कि अब ठीकेदार का ज्यादा अहसान लेना ठीक नहीं।

वह काम पर गई।

पगली मां की जगह उसके साथ एक नई मज़दूर भेजी गई।

वह बिलसपुरहिन थी।

लम्बी-छरहरी अधेड़ स्त्री।

बहुत मज़ाकिया थी बिलसपुरहिन। बात-बेबात खूब हंसा करती।

उसके दांत बाहर को निकले हुए थे।

बिलसपुरहिन ने विश्वास न किया कि ठीकेदारी में काम करने के बावजूद बिलौटी अभी कुंवारी है। इस रास्ते में कुंवारी लड़की मिलना संसार का आठवां आश्चर्य होता है।

भूनेसर यादव की पुरानी मुंहलगी थी बिलसपुरहिन।

उसने बिलौटी को बताया भी था कि ''ठीकेदार भूखा सेर है भूखा सेर, जिस दिन मौका पा जाएगा, खरबोट डालेगा, समझे!''

ये भी कहती बिलसपुरहिन-''अइसई नहीं अपनी झोपड़ी में बसाया है ठीकेदार ने। हां, एक बात है कि जबरई कुछ नहीं करेगा बो। उसके पास धीरज बहुत है। लहा-पटिया लेगा तुझे टूरी।''

बिलौटी कहां ऐसी बातों से डरने वाली थी।

अब तक तो वह चार-दीवारी और एक छत का मूल्य सोच ही चुकी थी।

भूनेसर यादव की निगाह में प्रीत-प्यार की परछाईं डोलती वह देख चुकी थी।
ल्ैकिन इतनी कम कीमत पर वह अपने कौमार्य का सौदा नहीं करना चाहती थी। उसे कुछ ज्यादा भी मिल सकता था यदि उसने चतुराई से काम लिया तौ!
देह का दाम जब तय ही होना है तो वह खरीददार की मर्जी के मुताबिक न होकर माल बेचने वाले की इच्छानुसार होना चाहिए।
बिलसपुरहिन के संग-साथ में वह काफी चतुर हो गई थी।
पैंतरेबाजी की कला वह सीख रही थी।
हां, भूनेसर यादव का सामना होने पर वह लजाने का ज़ोरदार अभिनय करती।
वह जानती थी कि भूनेसर यादव के अंदर आग सुलग रही है।
पगली मां अब को ये नया आशियाना रास न आया।
दवा-दारू के बाद भी मां की तबीयत ठीक न हुई।
ठीकेदार भूनेसर बिलौटी को उसकी रोजी के अतिरिक्त भी रूपिया दिया करता।
बिलौटी सब जानती-समझती, लेकिन उसके लिए वह उसका शुक्रिया अदा न करती।
बस, भूनेसर को अपनी बड़ी-बड़ी भूरी आंखें तिरछी करके निहार देती कि भूनेसर निहाल हो जाता।
बिलौटी की भूरी आंखों का शिकार हो चुका था भूनेसर यादव।

बिलौटी की हरक़तों से भूनेसर को ये तो पता चलता था कि वह उसमें रूचि लेती है, लेकिन उसके जीवन में आई अन्य मज़दूरिनों की तरह नहीं है बिलौटी, ये भूनेसर ने अच्छी तरह तजवीज कर लिया था।

आज तक जाने कितनी स्त्रियां सरलता से उसकी आगोश में भागी-दौड़ी चली आई है। बिलौटी किसी दूसरी मिट्टी की बनी लगती है।

भूनेसर गरमागर्म खाना खाने का शौकीन न था।

वह फूंक-फूंक कर क़दम रख रहा था।

●

एक दिन मौका पाकर भूनेसर बिलौटी का हाथ थाम बैठा।

वह दोपहर का समय था।

पगली मां की सेवा करके, खाना-दाना खाकर, बिलौटी बाजार जाने के लिए झोपड़ी से निकली थी। उसने सोचा था कि आज सनीचरी से मुलाकात करेगी और बन पड़ा तो अनपरा के सिनेमा हाल में जाकर पिक्चर भी देख लेगी। सुना है कि वहां 'हम आपके हैं कौन' लगी है। बड़ी अच्छी पिक्चर है। पैसे तो उसके पास थे ही। और कोई समस्या सामने न थी। पगली मां खाना खाकर दवा खा चुकी है। अब वह सोएगी तो शाम छह-

सात बजे तक उसकी नींद खुलेगी। रात भर तो खांस-खांस कर परेशान हो गई थी पगली मां।

हल्के गुलाबी रंग की साड़ी पहने थी बिलौटी, जिसपर उसका कुंवारा रूप दमक रहा था।

भूनेसर यादव के हाथ को उसने झटकना चाहा।

उसकी पकड़ बड़ी सख्ःत थी।

अपनी कलाई उसे टूटती सी लगी।

बिलौटी ने तब सवालिया निगाहों से भूनेसर यादव को देखा, जैसे पूछ रही हो-''का कर रहे हो आप?''

भूनेसर यादव की नशे में धुत्त आंखों में उसके सवाल का सिर्फ एक ही जवाब दिखलाई दे रहा था-''ये तो होना ही था।''

बिलौटी ने आस-पास का जायज़ा लिया।

वहां कोई न था, सिर्फ अमरूद का पेड़ उन्हें इस हालत में देख रहा था।

भूनेसर यादव अपने डेरे के पीछे पेशाब करने आया था, कि बिलौटी उसी समय जलवागर हुई थी।

भूनेसर ने उसे अपने डेरे की तरफ चलने का इशारा किया।

बिलौटी ने अब अपनी कलाई उसके हाथ से छुड़ाने का प्रयास करना बंद कर दिया और सोचने लगी कि शायद भूनेसर यादव ने अब तक जो भी मदद की है, उसका दाम वसूलना चाहता है।

लेकिन बस-स्टेंड के पिछवाड़े क्वार्टर वाला आदमी ऐसा न था। वह तो बड़ा मासूम सा खिलाड़ी था, जो बिलौटी के रूप का पुजारी हुआ करता था। वह अगर चाहता तो अब तक जोर-

जबरदस्ती कर चुका होता। बिलौटी तब नादान थी, आसानी से उसकी हवस का शिकार हो चुकी होती। लेकिन वह एक कोमल स्वभाव का इंसान था और बिलौटी से इस तरह व्यवहार करता जैसे वह कोई कांच की गुड़िया हो, जो ज़रा सी असावधानी से टूट-फूटकर चकनाचूर हो जाएगी।

बिलौटी का हाथ भूनेसर यादव छोड़ना नहीं चाहता था।

उसका हाथ थामे-थामे भूनेसर उसे अपने डेरे के अंदर ले गया।

अंदर कोठरी में पलंग बिछी थी।

भूनेसर ने बड़े एहतराम के साथ उसे पलंग पर बिठाया और स्वयं उसके सामने खड़ा हो गया। जैसे वह कोई देवी हो और भूनेसर अदना सा भक्त।

बिलौटी तड़प उठी।

अपने सौंदर्य की पूजा करवाने का उसका कोई इरादा न था। भूनेसर यादव उसका मालिक था। वह एक साधारण नौकर ही तो थी। उसकी क्या कोई सामाजिक हैसियत थी, जो भूनेसर यादव के सामने ठाट से विराज सके।

वह गड़बड़ा गई, लेकिन जल्द ही उसे अपने पास उपलब्ध दौलत की ताकत का आभाष हुआ। भूनेसर यादव ठीकेदार एक मामूली लड़की के पैर चूमने को बेताब है।

वह उसके सामने हाथ बांधे खड़ा उसकी निगाहे-करम का तलबगार है।

अनुनय-विनय कर रहा है।

बिलौटी का अभिमान मोम सा गलना चाहता था।

वह असमंजस में थी।
पगली मां के यौन-शोषण की दास्तान और पगली मां का असहाय जीवन उसकी आंखों के सामने सिनेमा की रील की तरह गुज़र रहा था। एक बार अपना सर्वस्व न्योछावर करने के बाद औरत के पास एक मर्द को देने के लिए फिर कुछ नया नहीं बचता। वह बासी हो जाती है, सेकण्ड-हैण्ड सामान की तरह।
बिलौटी को तय करना था अपना मूल्य, उसे जाननी थीं अपनी सीमाएं। उसे दिखलाई पड़ रही थी अपने असुरक्षित भविष्य की काली भयावह परछाईयां।
बिलौटी जानती थी कि कोई पत्थर की स्लेट नहीं कि उस पर कोई कुछ भी लिख कर मिटाता रहे। हां, कोई घाटे का सौदा भी बुरा नहीं होता, यदि उसमें मन की शांति शामिल हो।
मन ही मन वह कई मोर्चों से लड़ रही थी।
भूनेसर यादव के कांपते-गर्म हाथ के स्पर्श से डिग सकता था उसका धैर्य।
भूनेसर यादव के अंतहीन अहसानों का बोझ, उसकी देह की क़ीमत से कहीं ज्यादा था। लेकिन वह फिर भी उसमें उत्साह का संचार नहीं हो रहा था।
बिलसपुरहिन रेजा की बात बिलौटी को याद हो आई-''भूखा सेर है भूनेसरवा भूखा सेर...!''
उसे हंसी हो आई।

कहां गया शेर....उसके सामने तो दुम दबाए बैठा है एक पालतू कुत्ता, एक टुकड़ा रोटी की आस में जीभ लपलपाता, तलुए चाटता कुत्ता।

वह पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी रही।

भूनेसर यादव से रहा न गया।

इतने नखरे, इतना इंतेजार की उसे आदत न थी।

झट उसने तुरूप का पत्ता फेंका-''तुझे रानी बना कर रखूंगा।''

क्या बिलौटी वाक़ई रानी बनना चाहती थी? नहीं, वह फिर भी न पिघली।

भूनेसर यादव और झुका-''तू खुद बता, तुझे क्या चाहिए?''

बिलौटी नहीं जानती थी कि उसे क्या चाहिए? इतनी लम्बी योजना उसने कभी बनाई होती तब न कुछ बोल पाती। और आज तक उसे अपनी चाहत प्रकट करने का अवसर ही कहां मिला था। अब जब भूनेसर यादव ने सवाल किया था तो उसे कुछ न कुछ कहना ही था, लेकिन उसके पास भाषा का औज़ार कहां था?

बिलौटी चाहती थी कि भूनेसर खुद तय करे कि उसके मन में क्या है?

कोठरी की छप्पर के नन्हे-नन्हे छेद से आती सूरज की किरणों से कमरे में रोशनी थी। चवन्नी-अठन्नी और रूपए के सिक्के की मानिंद सैकड़ों गोल-गोल प्रकाश-वृत्त कमरे में जगमगा रहे थे। ऐसा ही एक रोशनी का गोल सिक्का, बिलौटी की नाक मे डली फुल्ली पर पड़ रहा था। फुल्ली का नग जगमग-जगमग

करके बिलौटी के सौंदर्य को अलौकिक आभा प्रदान कर रहा था। भूनेसर यादव उसके रूप के जादू में फंस चुका था। बिलौटी उसके लिए एक चैलेंज की तरह थी।

इतनी औरतें आई जीवन में लेकिन अपना इतना भाव तो किसी ने न लगाया था। जाने ये ससुरी बिलौटी क्या सोचे बैठी है?

बिलौटी पलंग से उठने को हुई।

कहा-''सनीचरी के संग अनपरा जाकर सिनेमा देखने का मन था।''

भूनेसर यादव तड़प उठा-''अरी बिलौटी, छोड़ ई सिनेमा-विनेमा, का रक्खा है उसमें। तू यहीं बैठी रह। तुझे रानी बना कर रखूंगा। तेरे आस-पास किसी फतिंगे की तरह मंडराता रहूंगा। यदि मैं ठीकेदार बना रहा तो तू भी ठीकेदारिन कहलाएगी।''

बिलौटी ने इस प्रस्ताव पर भी जब उत्साह न दिखलाया तो भूनेसर ने और दाम बढ़ाया-''तेरे सिवा अब और किसी औरत के पास न जाऊंगा। गांव में जैसे मेरी घरवाली है, वैसे तू इस कर्मक्षेत्र में मेरी पटरानी बन कर रहेगी।''

बिलौटी की आंखें भर आईं-''सच्ची!''

भूनेसर दिल से बोला-''हां रानी, हां...!''

भूनेसर को थाह मिल गई।

बिलौटी को राह मिल गई।

बिलौटी के पास ऐसे-ऐसे जादू थे कि भूनेसर फिर उसी का होकर रह गया।

गांव की अपनी ब्याहता अहिराईन को भुला ही बैठा, लेकिन बिलौटी ने अपनी सौतन के साथ अन्याय न किया। वह हमेशा भूनेसर को याद दिलाती रहती कि उसकी एक और बीवी है।

•

पगली मां मर गई।

भूनेसर का मोटर-साइकिल से एक्सीडेंट क्या हुआ, कि वह चलने-फिरने के लायक न रहा। बिलौटी ने उसका पूरा-पूरा साथ दिया।

वह स्वयं भूनेसर यादव के नाम से ठेका लेने लगी।

बिलौटी मर्दाना लटके-झटके सीख गई।

भूनेसर उसका दास बना रहा।

बिलौटी की एक बेटी है। बिलौटी ने उसका नाम रखा है 'सुरसत्ती'।

सुरसत्ती स्कूल जाती है।

भूनेसर सुरसत्ती को खूब प्यार करता है।

बिटिया सुरसत्ती बिलौटी को कभी-कभी प्यार से समझाया करती-''मां, मुझे सुरसत्ती न कहा कर, मेरा असल नाम 'सरस्वती' है।''

बिलौटी 'सरस्वती' बोल न पाती तो मर्दानी हंसी के साथ बोलती-''स्साली सुरसत्ती, दिल लगा कर पढ़ाकर, महतारी की ग़लती न निकाला कर...!''

अनवर सुहैल

(०९ अक्टूबर १९६४ जांजगीर छ.ग.)

उपन्यास

पहचान (२००९)

सलीमा (परिंदे में धारावाहिक रूप से प्रकाशित)

कथा-संग्रह

कुंजड-कसाई, गहरी जड़ें

कविता

और थोड़ी-सी शर्म दे मौला

संतों काहे की बेचैनी

सम्पादन

कविता-केन्द्रित लघुपत्रिका 'संकेत'

संपर्क

टाइप ४/३ ऑफिसर कॉलोनी

पो बिजुरी जि. अनुपपुर म.प्र. ४८४४४०

९९०७९७८१०८ sanketpatrika@gmail.com